४. किताबें

– गुलजार

लेखनीय

निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर पुस्तकों से संबंधित चर्चा के आयोजन में सहभागी होकर लिखिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

- पाठ्येतर पुस्तकें । • पुस्तकों का संकलन । • पुस्तकों की देखभाल ।
- विचार मंथन ——► विचार, वाक्य, सुवचन ।

किताबें झाँकती हैं बंद अलमारी के शीशों से,
बड़ी हसरत से तकती हैं ।
महीनों अब मुलाकातें नहीं होतीं,
जो शामें उनकी सोहबत में कटा करती थीं
अब अक्सर ....

गुजर जाती हैं 'कंप्यूटर के पर्दों पर'
बड़ी बेचैन रहती हैं किताबें ....
उन्हें अब नींद में चलने की आदत हो गई है
जो कदरें वो सुनाती थी
कि जिनके 'सेल' कभी मरते नहीं थे,
वो कदरें अब नजर आती नहीं घर में,
जो रिश्ते वो सुनाती थीं ।

वह सारे उधड़े–उधड़े हैं,
कोई सफा पलटता तो इक सिसकी निकलती है,
कई लफ्जों के मानी गिर पड़े हैं
बिना पत्तों के सूखे–टुंड लगते हैं वो सब अल्फाज,
जिन पर अब कोई मानी नहीं उगते ....

परिचय

जन्म : १८ अगस्त १९३६ में दीना, झेलम जिला, पंजाब, (स्वतंत्रता पूर्व भारत) में हुआ ।
परिचय : गुलजार जी का मूल नाम संपूरन सिंह कालरा है । आप एक कवि, पटकथा लेखक, फिल्म निर्देशक, नाटककार होने के साथ–साथ हिंदी फिल्मों के प्रसिद्ध गीतकार हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : चौरस रात (लघुकथाएँ), रावी पार (कथा संग्रह), रात, चाँद और मैं, एक बूँद चाँद, रात पश्मीने की (कविता संग्रह), खराशें (कविता, कहानी का कोलाज) ।

पद्य संबंधी

नई कविता : आधुनिक संवेदना के साथ परिवेश के संपूर्ण वैविध्य को नए शिल्प में अभिव्यक्त करने वाली काव्यधारा है ।

प्रस्तुत कविता में गुलजार जी ने पुस्तकें पढ़ने का सुख, कंप्यूटर के कारण पुस्तकों के प्रति अरुचि, पुस्तकों और मनुष्यों के बीच बढ़ती दूरी और उससे उत्पन्न दर्द को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

https://youtu.be/tHGlJOo3J14

जुबां पर जो जायका आता था जो सफा पलटने का
अब उँगली 'क्लिक' करने से बस
झपकी गुजरती है
बहुत कुछ तह-ब-तह खुलता चला जाता है परदे पर,
किताबों से जो जाती राब्ता था, कट गया है ....

कभी सीने पे रख के लेट जाते थे
कभी गोदी में लेते थे
कभी घुटनों को अपने रिहल की सूरत बनाकर
नीम-सजदे में पढ़ा करते थे, छूते थे जबीं से
वो सारा इल्म तो मिलता रहेगा आइंदा भी

मगर वो जो किताबों में मिला करते थे सूखे फूल
और महके हुए रुक्के
किताबें गिरने, उठाने के बहाने रिश्ते बनते थे
उनका क्या होगा ? वो शायद अब नहीं होंगे !!

—०—

संभाषणीय

सुप्रसिद्ध कवि गुलजार की अन्य किसी कविता का मौन वाचन करते हुए आनंदपूर्वक रसास्वादन कीजिए तथा निम्न मुद्दों के आधार पर केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए ।

विषय | उद्‌देश्य | भाव

पठनीय

पाठ्‌यपुस्तक की किसी एक कविता का मुखर एवं मौन वाचन कीजिए ।

श्रवणीय

सफदर हाश्मी रचित 'किताबें कुछ कहना चाहती हैं' कविता सुनिए ।

शब्द संसार

हसरत (स्त्री.अ.) = कामना, उम्मीद, इच्छा
सोहबत (पुं.अ.) = संगत
कदरें (स्त्री.अ.) = मूल्य, मायने
जायका (पुं.अ.) = लज्जत, स्वाद
सफा (पुं.अ.) = पन्ना
अल्फाज (पुं.अ.) = शब्द
राब्ता (पुं.अ.) = संपर्क
जबीं (स्त्री.अ.) = माथा
इल्म (पुं.अ.) = ज्ञान
रुक्के (पुं.अ.) = चिट्‌ठी, संदेश पत्र
रिहल (स्त्री.अ.) = ठावनी जिसपर धर्मग्रंथ रखकर पढ़ा जाता है ।

आसपास

'पुस्तकांचे गाव- भिलार' संबंधी जानकारी समाचार पत्र/अंतरजाल आदि से प्राप्त कीजिए और उसे देखने का नियोजन कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

'ग्रंथ हमारे गुरु' चर्चा कीजिए तथा अपने विचार लिखिए ।

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(क) पाठ के आधार पर वाक्य पूर्ण कीजिए :

१. किताबों की अब बनी आदत ....

२. किताबें जो रिश्ते सुनाती थीं ....

(ख) लिखिए :

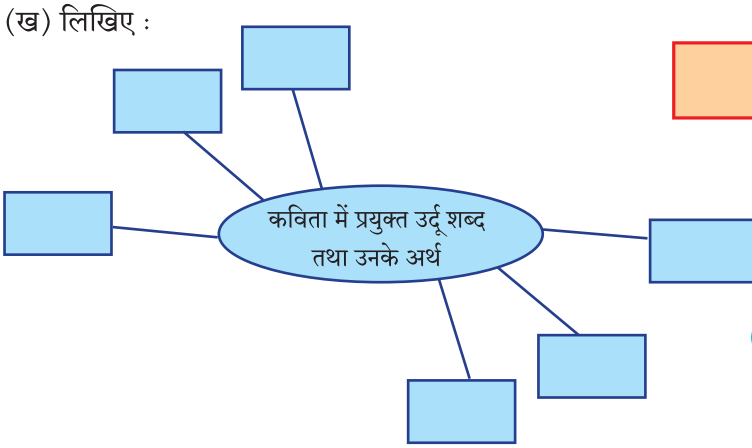

ग) आकृति :

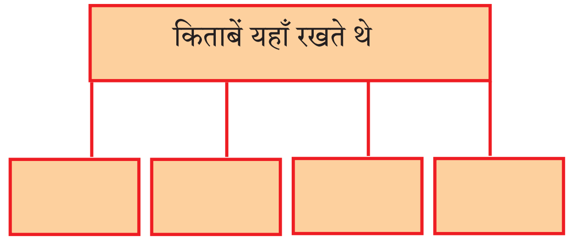

(२) प्रथम पाँच पंक्तियों का भावार्थ लिखिए ।

पाठ से आगे

अपने तहसील/जिले के शासकीय ग्रंथालय संबंधी जानकारी निम्नलिखित मुद्‌दों के आधार पर प्राप्त कीजिए :- स्थापना-तिथि/वर्ष, संस्थापक का नाम, पुस्तकों की संख्या, विषयों के अनुसार वर्गीकरण

भाषा बिंदु

शब्द-युग्म पूरे करते हुए वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-

शब्द-युग्म

घर - [ ] ....

उधड़े - [ ] ....

भला - [ ] ....

प्रचार - [ ] ....

भूख - [ ] ....

भोला - [ ] ....

रचना बोध

....

....

....